IR
Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA

Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed
Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 12, December. 2025

जोड़ासाँकों की ठाकुरबाड़ी: भव्यता के आवरण में स्त्री जीवन की त्रासदी

डॉ. मीना राठौर

सहायक प्राध्यापक, हिंदी ,प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस, श्री नीलकंठेश्वर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय – खंडवा, मध्य प्रदेश.

DOI: https://doi.org/10.57067/ir.v2.i12.471

यह शोध आलेख जोड़ासाँकों की ठाकुरबाड़ी को केवल उसकी सांस्कृतिक भव्यता और साहित्यिक गौरव के रूप में नहीं, बल्कि उसके भीतर स्त्रियों के दमन, मानसिक यातना और मौन पीड़ा के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करता है। लेख का केंद्र मृणालिनी देवी और कादंबरी देवी के जीवनानुभव हैं, जिनके माध्यम से पितृसत्तात्मक व्यवस्था, वर्गीय असमानता और तथाकथित प्रतिष्ठित परिवारों में स्त्री की असहाय स्थिति का विश्लेषण किया गया है। बाल विवाह, नाम और पहचान का हरण, भावनात्मक उपेक्षा, निरंतर मातृत्व का बोझ तथा मानसिक अवसाद—ये सभी अनुभव ठाकुरबाड़ी की स्त्रियों के जीवन को घेरते हैं। रविंद्रनाथ ठाकुर जैसे महान कवि और साहित्यकार की निजी पारिवारिक भूमिका पर प्रश्न उठाते हुए यह अध्ययन उनके कवि-हृदय और पति-हृदय के अंतर्विरोध को उजागर करता है। साथ ही, विधवा स्त्रियों के प्रति अमानवीय दृष्टिकोण, पुनर्विवाह विरोध और आर्थिक निर्भरता को भी आलोचनात्मक दृष्टि से देखा गया है। लेख यह प्रतिपादित करता है कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता और आधुनिकता की बातें करने वाला समाज अपने घरों में स्त्रियों को मानसिक गुलामी में जीने को विवश करता रहा। इस प्रकार, जोड़ासाँकों की ठाकुरबाड़ी स्त्री जीवन के दबे हुए यथार्थ और अनकहे सचों की सशक्त प्रतीक बनकर उभरती है।

Keywords: जोड़ासाँकों, मृणालिनी देवी, ठाकुरबाड़ी, रविंद्रनाथ ठाकुर, राष्ट्रीय स्वतंत्रता, मानसिक गुलामी.

जन्म से उसे नाम मिला भवतारिणी और जीवन के अंत तक पहुंचते-पहुंचते उसने अपने नाम को कुछ इस तरह सार्थक किया कि ठाकुरबाड़ी को अपने अंत में दफन कर तार दिया ।जिस बालिका को मात्र दस वर्ष की आयु में बाईस वर्ष के पुरुष से ब्याह दिया जाए और पति परमेश्वर उसका नाम बदलकर मृणालिनी कर दे। जिसमें कहीं उनकी प्रियतमा का नाम छुपा हुआ है और यह सच्चाई उसे जीवन के कई बरस बीत जाने के बाद समझ आती है- "नलिनी ही क्या मृणालिनी नहीं है? मेरा नाम सुनते ही जिससे तुम्हारे जीवन की प्रथम प्रेमिका की स्मृति तुम्हारे मन में आए इसलिए मेरा नाम मृणालिनी नहीं रखा गया। में एक दूसरी लड़की का प्रतिबिंब बनकर तुम्हारे जीवन में प्रविष्ट हुई।"[1] एक व्यक्ति से जुड़ते ही उसका सब कुछ उससे छिन गया । उसका नाम, उसकी पहचान, उसका अस्तित्व भी। और ऐसा क्यों ना हो जब वह व्यक्ति एक बहुत प्रतिष्ठित घराने का पुत्र होने के साथ-साथ भविष्य का लेखक,कवि,संगीतकार और भी न जाने क्या-क्या है।

ठाकुरबाड़ी बंगाली संस्कृति से सजी-धजी वह वह जगह जहां पर शानो- शौकत और ऐसो - आराम की सारी सुविधाएं मौजूद थी सिवाय स्त्री केअधिकारों के। स्त्री स्वतंत्रता और स्त्री स्वाधीनता

Received **06 December 2025**; Accepted **26 December 2025**. Available online: **30 December 2025**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

IR Integral Research
Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 12, December. 2025

की बातें साहित्य जगत में या पूरे विश्व में चाहे कितनी ऊंची आवाज में उठाई जा रही हो लेकिन ठाकुरबाड़ी के भीतर रहने वाली स्त्रियों की आवाज कभी उनके कंठ से बाहर तक नहीं निकल पाई- "मेरे जीवन में कुछ है ही नहीं - एक के बाद एक उनकी संतानों की मां बनना, एवं उन्हें पाल-पोसकर बड़ा करना तथा क्रमशः एकाकी और रुग्ण होते जाने के सिवा।"2 रवि ठाकुर की पत्नी बनकर मृणालिनी मन और शरीर से न सिर्फ बीमार होती है बल्कि पल-पल इस बात से आहत भी होती है कि जिस रवि ठाकुर की वह पत्नी और पांच बच्चों की माँ है,वह रवि ठाकुर रंच मात्र भी उसका नहीं है - "मैंने तो सत्य ही एकजन के साथ गृहस्थी बसाई, उनके पुत्र- पुत्रियों की मां हुई। तथापि वह दूसरे का ही होकर रहा- ऐसे एकजन का जो इस पृथ्वी पर ही नहीं है, तब भी वह है -मेरे और उनके बीच।"3 रवि ठाकुर भले किसी एक के होकर ना रहे लेकिन मृणालिनी देवी और रवि ठाकुर के बीच एक तीसरे की उपस्थिति हमेशा रही। यही मृणालिनी के जीवन का सबसे दुखद पहलू रहा। जोड़ासाँकों की ठाकुरबाड़ी वैसे तो अपनी भव्यता और अपने राजसी ठाट-बाट के लिए जानी जाती रही है लेकिन स्त्री जगत के लिए यह ठाकुरबाड़ी हमेशा से ही निर्मम रही। इसके नेपथ्य में जो जो भी कारण रहे हो पर वह स्त्री जाति की स्वतंत्रता के पक्षधर तो नहीं कहे जा सकते - "तुम नोतुन बोउठान को बहुत प्यार करते थे। और कहा था कि नोतुन बोउठान तुम्हें बहुत-बहुत प्यार करती थी । उसी नोतुन बोउठान ने तुम्हारे- मेरे विवाह के कुछ महीनो के भीतर ही आत्महत्या के पथ का चुनाव क्यों कर कर लिया? कौन सा ऐसा दुख हुआ उन्हें ?"4 नोतुन बोउठान अर्थात कादंबरी देवी जो रवि ठाकुर की प्रिय सखी के समान थी। आखिर क्या कारण था कि उस स्त्री ने अपनी जीवन -लीला समाप्त करना ज्यादा उचित समझा। उसकी मौत को भी ठाकुरबाड़ी ने रहस्य बना कर हमेशा के लिए दफन कर दिया- "बहु मां अभी जीवित है,उनकी चिकित्सा की व्यवस्था करो और उनकी आत्महत्या के समस्त प्रमाणों को खत्म करने का इंतजाम करो।.....पुलिस से लेकर डॉक्टर तक सब ने भय से अथवा घुस खाकर चुप्पी साध ली। कहा गया उनका अचानक हार्ट फेल हो गया।दो दिन पहले नोतुन बोउठान ने जो अफीम खाई थी वह बात ही ठाकुरबाड़ी दबा ले गई। यही है, इस बड़े घर की एकता।"5 ठाकुरबाड़ी की दीवारों के

Received 06 December 2025; Accepted 26 December 2025. Available online: 30 December 2025. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

भीतर दर्द स और अकेलेपन से सिसकती स्त्रियों की चीखें कभी किसी को सुनाई नहीं दी।

ठाकुरवाडी में विवाह करके घर बसाने वाली स्त्रियां चिता पर लेट कर ही बाहर आती रही-" टैगोर परिवार से कादंबरी का आत्महत्या करके निकल जाना तो किसी फिल्मी कहानी जैसा था,परिवार में उनकी आमद भी कम नाटकीय नहीं थी। टैगोर परिवार का पराली ब्राहमण वाला इतिहास उनका पीछा नहीं छोड़ रहा था। इस बीच दो नई सामाजिक बीमारियां आ चुकी थी। एक था उनके घर के लोगों का विदेश यात्रा करना,दूसरा था ब्राह्मों बनकर मांस मदिरा का सेवन करना और जाति धर्म के नियमों को छोड़ देना।"6

शांतिनिकेतन की स्थापना करने वाले रवि ठाकुर की जोड़ासाँकों स्थित ठाकुरबाड़ी में शांति स्थापित करने की जिम्मेदारी आखिर किसकी थी?तत्कालीन मुखिया की या उस हवेली की स्त्रियों में ही उस साहस की कमी थी जिसके चलते वो सभी जीवन में हमेशा अस्थिरता और अशांति के बीच ही झूलती रही। क्योंकि जब देश स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए एक विदेशी ताकत से लड़ने के लिए देश की आधी आबादी से यह उम्मीद कर रहा था कि वो स्वतंत्रता की लड़ाई में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हुए आहुति दे तब देश के इतने बड़े जाने-माने परिवार की स्त्रियां आखिर क्यों मानसिक दरिद्रता के साथ जी रही थी?

वह कौन से निजी और अत्यंत ही गोपनीय कारण रहे होंगे जिनके चलते एक कवि, लेखक और साहित्यकार की अर्धांगिनी स्वयं को परिचारिका के रूप में महसूस करते हुए अपनी अनंत इच्छाओं और कामनाओं का गला घोटते हुए दिन प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा मरते जाती है। या जोड़ासाँकों की ठाकुरबाड़ी की हवाओं में ही कुछ ऐसा था कि आधी आबादी के प्रति पुरुष वर्ग तो निर्मम है ही,लेकिन स्त्री के प्रति स्त्री भी कम निर्दयी नहीं - "जोड़ासाँकों की ठाकुरबाड़ी में विशेष कर महिला मंडल में कूट - नीतियों का कोई अंत नहीं। केवल दुनियावी उठापटक। सभी अपनी स्वार्थ सिद्धि में लगे हुए हैं। इस नोच- खसोट के बीच में सड़ रही हूं। जितना हो सकता है मानकर चलने की चेष्टा करती हूं। कभी-कभी मन में आता है कि घर- गृहस्थी, बाल- बच्चे सब दायित्व क्या सिर्फ मेरा ही है ?"7 दस साल में रवि ठाकुर के पांच बच्चों को जन्म देने वाली मृणालिनी देवी अपने ही परिवेशऔर परिवार के

Received 06 December 2025; Accepted 26 December 2025. Available online: 30 December 2025. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed
Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 12, December. 2025

बीच इस कदर मानसिक यंत्रणा से ग्रस्त है,कि ना उससे उबर पाती है और ना उसका विरोध कर पाती हैं। क्योंकि विरोध करने के लिए पैरों के नीचे एक ठोस जमीन की आवश्यकता होती है।

इन पिराली ब्राह्मणों को सामाजिक बहिष्कार के चलते अपने ही घर में काम करने वाले कामगारों की बेटियों को अपने बेटों से ब्याह कर लाना पड़ा, जिसके चलते बहुओं के परिवारजनों की गरीबी ने उनके विरोध करने की क्षमता को ग्रस्त लिया -"मैं जस्सोर जिला के फूलतूली ग्राम की लड़की हूं। बांगाल तो हूं ही। तिस पर मेरे पिता बेनीमाधव जोड़ासाँकों की ठाकुरबाड़ी के वित्तीय कर्मचारी। सच बात कहूँ । इतना बेमेल विवाह होना उचित नहीं है। रविंद्रनाथ की पत्नी होने लायक कोई योग्यता ही मुझमें नहीं है।"8 गरीब परिवारों की बेटियों से ब्याह करना भले ही ठाकुर परिवार की मजबूरी रही हो,लेकिन उनके साथ दुर्व्यवहार करना किसी भी द्रष्टि से मजबूरी की श्रेणी में नहीं आंका जा सकता। कादंबरी देवी और मृणालिनी देवी दोनों ही इस परिवार की ऐसी बहुएं थी जो अत्यंत ही निम्न वर्गीय परिवार में जन्म लेने के बावजूद ठाकुर परिवार में ब्याह कर लाई गई थी ।जिसमें इन दोनों का कोई दोष नहीं -" कहते हैं कि कादंबरी देवी का मायका हाड़काटा गली में था। हाड़काटा का शाब्दिक अर्थ है जहां हड्डियां काटी जाती हो,जबकि वास्तविकता में यहां देह व्यापार होता था,उसे चलती जबान में हम रेड लाइट एरिया बोलते हैं। यह बात सच हो भी सकती है और नहीं भी,कायदे से तो इस बात से कादंबरी देवी के व्यक्तित्व पर कोई असर नहीं पड़ना चाहिए,लेकिन ऐसा होता नहीं है।"9 कादंबरी देवी को जीवन भर ठाकुरबाड़ी में अपने पिता और परिवार को लेकर तरह-तरह के ताने सुनने पड़ते हैं,जिससे उसका जीवन एकाकी और कुंठाग्रस्त हो जाता है ।

दूसरी तरफ दूसरी तरफ मृणालिनी देवी रवि ठाकुर की उपेक्षा का शिकार होकर स्वयं अवसाद ग्रस्त हो जाती है - "मेरे जीवन में कुछ है ही नहीं-एक के बाद एक उनकी संतानों की मां बनना,एवं उन्हें पाल-पोसकर बड़ा करना तथा क्रमशः एकाकी और रुग्ण होते जाने के सिवा।"10 ठाकुरबाड़ी के सबसे प्रतिष्ठित व्यक्तित्व की जीवन संगिनी ही अपने जीवन को इतना मूल्यहीन महसूस करती है तब अन्य की मानसिक गुलामी का स्तर स्वत ही नजर आने लगता है। इतना ही नही अगर इन सबसे समय

Received 06 December 2025; Accepted 26 December 2025. Available online: 30 December 2025. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

निकाल कर थोड़ा सा सज -सवर लिया जाए तो रवि ठाकुर को यह भी गवारा नही -"असभ्य देश के लोग ही चेहरा चित्रित करते हैं। तुम क्या चेहरे पर रंग पोत कर असभ्य देश के लोगों की तरह बनना चाहती हो?" 11 देश विदेश में घूमने वाले पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंगे हुए रवि ठाकुर अपनी पत्नी को सज-संवरा नही देख सकते । इसके पीछे उनका चोट खाया हुआ पुरुषत्व ही नजर आता है।

जीवन संगिनी अकेले बच्चों का भरण पोषण करते हुए अवसादग्रस्त और मानसिक रूप से बीमार होती जा रही है,ऐसी अवस्था में उसकी देखभाल करने की अपेक्षा रवि ठाकुर जीवन रूपी नाव पर सवार होकर देश से लेकर विदेश तक का भ्रमण कर रहे होते हैं ।एक कवि का हृदय इतना निष्ठुर कैसे हो सकता है कि वह अपनी जीवन संगिनी और अपनी संतानों के हृदय से निकलने वाली आह को महसूस ना कर सके।प्रेम और प्यार से परिपूर्ण काव्य रचना करने वाले रवि ठाकुर अपनी पत्नी और अपनी संतानों को अपने प्रेम से वंचित क्यों और कैसे रख सकते हैं-" मैं जानता हूं, मैं एक लंबी यात्रा का पथिक हूं। मुझे अभी बड़ा लंबा सफर तय करना है। इस लंबी यात्रा के कारण ही मैं अपने इष्ट मित्रों, घर, परिवार, तुमको, अपने बच्चों को... कुछ भी, किसी को भी मन से जकड़कर नहीं रखता।"12 वास्तविकता में जिन रिश्तों को तन से जकड़ कर रखा जाता है,उन रिश्तो में मन रम नहीं पाता। जिस कवि का मन अनंत आकाश की ऊंचाइयों से लेकर पाताल तक की गहराइयों को महसूस करके अपनी लेखनी में उकेरता है, वही अपनी जीवन संगिनी की सांसों को महसूस नहीं कर पाता और कहता है-"मेरे अंदर एक प्रबल शक्ति है। में जानता हूं वह शक्ति विभिन्न पदों का अवलंबन कर धीरे-धीरे स्वयं को प्रकट करेगी। यदि अंदर ही अंदर में स्वयं को निष्ठुर न कर लूं,तो उस शक्ति को मैं बचा कर नहीं रख पाऊंगा। यदि आसक्त हो जाऊं तो मेरा सब कुछ नष्ट हो जाएगा।"13 यह कैसा कवि हृदय था जो जीवन पथ पर साथ चलने वाली जीवन संगिनी के दारुण दर्द से अनभिज्ञ रहकर अनंत आकाश की ऊंचाइयों में अपनी शक्ति को अवलंबित करने की चाह में गतिमान है।

जोड़ासाँकों की ठाकुरबाड़ी का यह ठाकुर परिवार स्त्री वर्ग के प्रति निष्ठुर और कठोर तो है ही, लेकिन परिवार में पुरुष की मृत्यु होने के पश्चात विधवा स्त्री के प्रति भी उनके मन में करुणा और दया

Received 06 December 2025; Accepted 26 December 2025. Available online: 30 December 2025. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 12, December. 2025

के स्थान पर रूपए पैसे का हिसाब किताब ही सर्वोपरि रहा है- "वीरेंद्र की विधवा पत्नी प्रफुल्लमयी के विषय में बाबा मोशाय ने एक बार भी नहीं सोचा। प्रफुल्लमयी के लिए प्रतिमास सौ रूपये तय किया गया। प्रफुल्लमयी अर्थ चिंता में टूट गई। जोड़ासाको का पारिवारिक परिवेश जैसे मानो अंधकार पूर्ण और जटिल हो उठा।"14 परिवार के मुखिया बाबामोशाय अपने पुत्र के उन्माद ग्रस्त होने पर उसे अपनी पैतृक संपत्ति से बेदखल कर देते हैं,और एकमात्र विधवा बहू जिसकी संतान बालू की मृत्यु हो चुकी है,उसके लिए महीने के सौ रूपये खर्च तय कर देते हैं। क्योंकि उनका मानना है कि उनके उन्माद ग्रस्त पुत्र को अब हिसाब किताब करना आएगा नहीं और विधवा बहू को सिर्फ कुछ पैसों की ही हकदार मानकर उसके जीवन को चिंता में डाल देते हैं । स्त्री वर्ग के लिए प्रतिष्ठित परिवार का इतना कठोर और हृदयहीन भूमिका में दिखाई देना इनके कवित्व और कृतित्व पर अनायास ही प्रश्न खड़े करता है।

जोड़ासाँकों की ठाकुरबाड़ी में जहां एक तरफ दादामोशाय जैसे नियमों के धनी परिवार के मुखिया पद पर आसीन है तो वहीं दूसरी तरफ ज्योतिरिंद्रनाथ जैसे भाई भी है जो रवि ठाकुर और कादंबरी देवी के बीच पनपने वाले रिश्ते से पूरी तरह अनभिज्ञ बन बैठे थे। -'मुझे लगता है कि इनके नोतुन दादा बड़े भैया ज्योतिरिंद्रनाथ धीरे-धीरे यह समझ रहे थे कि उनकी पत्नी से लाड़ला देवर प्रेम करने लगा है। और इस विषय में भी मुझे लगता है उनके मन में कोई संदेह न था कि पत्नी को भी इस संसार में प्रेम करने योग्य एक पुरुष प्राप्त हुआ है।15 जिससे यह भी कयास लगाया जा सकता है कि उनकी पत्नी उनके प्रेम के योग्य नहीं है और अगर कोई अन्य पुरुष कादंबरी देवी को प्रेम करने योग्य समझता है तो इससे उनका कोई लेना देना नहीं।

बाबूमोशाय के पोते बालू की मृत्यु हो चुकी है। उसकी एक पन्द्रह वर्षीय विधवा पत्नी भी है, जिसके परिवार वाले उसे अपने साथ ले जाते हैं ताकि उसका पुनर्विवाह किया जा सके। लेकिन इस प्रतिष्ठित परिवार को अपनी बहू का किसी अन्य से आत्मीयता जोड़ना गवारा नहीं,क्योंकि उनकी नजरों में यह उनके कुल की मर्यादा को ठेस पहुंचाने वाला घ्रणित कार्य है- "ज्यों ही बाबूमोशय के कर्ण कुहरों में साहाना के पुनर्विवाह के प्रयत्नों की बात पहुंची उनके तन बदन में जैसे आग लग गई। वे विधवा विवाह के घोर विरोधी थे। उन्हें लगा

Received 06 December 2025; Accepted 26 December 2025. Available online: 30 December 2025. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 12, December. 2025

ठाकुरबाड़ी की किसी विधवा के अन्यत्र विवाह से उनकी वंश मर्यादा को ठेस पहुंचेगी।"16 उस बाल विधवा को वापस हांक कर लाने की जिम्मेदारी दी भी जाती है, तो रवि ठाकुर को क्योंकि उन्हें विश्वास था कि वह अपनी बातों के माया -जाल में उलझा कर साहाना के माता-पिता को मना लेंगे और उसे वापस जोड़ासाँकों की ठाकुरबाड़ी में जीते जी मरने के लिए वापस ले आएंगे।

रवि ठाकुर की अर्धांगिनी जोड़ासाँकों की ठाकुरबाड़ी में अपने पारिवारिक दायित्व का निर्वहन करते-करते मृत्यु के दरवाजे तक पहुंच जाती हैं। लेकिन यहां तक आकर भी वो अपनी संतान के सुख से वंचित हैं । इसका कारण भी उनके पति परमेश्वर रवि ठाकुर है-" गत साल पन्द्रह जून को रवि ठाकुर ने बहुत सोच समझकर माधुरीलता को जबरन मुझसे छीनकर उसका विवाह कर दिया। किसके साथ ? उन्ही बिहारी लाल चक्रवर्ती के पुत्र के साथ जो नोतुन बोउठान के भक्त- बंधु थे।"17 यही नहीं वे अपनी दूसरी पुत्री का विवाह मात्र दस वर्ष की उम्र में महज इसलिए कर देते हैं, क्योंकि बाबूमोशाय ने अपनी वसीयत में लिखा था, कि उनके जीते जी जिन लड़कियों की शादी होगी उसका खर्च जोड़ासाँकों के खजाने से मिलेगा। क्या एक कवि हृदय दुनिया के हिसाब किताब में इतना रमता है, कि अपनी स्वयं की संतानों के भविष्य से भी खिलवाड़ कर जाए। स्त्री जीवन के कई अनसुलझे पहलुओं को अपने में दबाए जोड़ासाँकों की यह ठाकुरबाड़ी आज भी अनगिनत सच अपनी सख्त लेकिन भीतर से जर्जर हो चुकी दीवारों की भीतर समय हुए हैं।

संदर्भ सूची:

1 बंधोपाध्याय रंजन : मै रविन्द्रनाथ की पत्नी /मृणालिनी की गोपन आत्मकथा, पृष्ठ-48

2 बंधोपाध्याय रंजन : मै रविन्द्रनाथ की पत्नी /मृणालिनी की गोपन आत्मकथा, पृष्ठ-27

3 बंधोपाध्याय रंजन : मै रविन्द्रनाथ की पत्नी /मृणालिनी की गोपन आत्मकथा, पृष्ठ-107

4 बंधोपाध्याय रंजन : मै रविन्द्रनाथ की पत्नी /मृणालिनी की गोपन आत्मकथा, पृष्ठ-40

5 बंधोपाध्याय रंजन : मै रविन्द्रनाथ की पत्नी /मृणालिनी की गोपन आत्मकथा, पृष्ठ-143

6 मुखर्जी अनिमेष : ठाकुरबाड़ी / गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर का कुटुंब वृतांत,पृष्ठ-90

7 बंधोपाध्याय रंजन : मै रविन्द्रनाथ की पत्नी /मृणालिनी की गोपन आत्मकथा, पृष्ठ-30

Received **06 December 2025**; Accepted **26 December 2025**. Available online: **30 December 2025**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 12, December. 2025

8 बंधोपाध्याय रंजन : मै रविन्द्रनाथ की पत्नी /मृणालिनी की गोपन आत्मकथा, पृष्ठ-22

9 मुखर्जी अनिमेष : ठाकुरबाड़ी / गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर का कुटुंब वृतांत,पृष्ठ-90

10 बंधोपाध्याय रंजन : मै रविन्द्रनाथ की पत्नी /मृणालिनी की गोपन आत्मकथा, पृष्ठ-27

11 बंधोपाध्याय रंजन : मै रविन्द्रनाथ की पत्नी /मृणालिनी की गोपन आत्मकथा, पृष्ठ-100

12 बंधोपाध्याय रंजन : मै रविन्द्रनाथ की पत्नी /मृणालिनी की गोपन आत्मकथा, पृष्ठ-85

13 बंधोपाध्याय रंजन : मै रविन्द्रनाथ की पत्नी /मृणालिनी की गोपन आत्मकथा, पृष्ठ-26

14 बंधोपाध्याय रंजन : मै रविन्द्रनाथ की पत्नी /मृणालिनी की गोपन आत्मकथा, पृष्ठ-33

15 बंधोपाध्याय रंजन : मै रविन्द्रनाथ की पत्नी /मृणालिनी की गोपन आत्मकथा, पृष्ठ-85

16 बंधोपाध्याय रंजन : मै रविन्द्रनाथ की पत्नी /मृणालिनी की गोपन आत्मकथा, पृष्ठ-35

17 बंधोपाध्याय रंजन : मै रविन्द्रनाथ की पत्नी /मृणालिनी की गोपन आत्मकथा, पृष्ठ-160

Received **06 December 2025**; Accepted **26 December 2025**. Available online: **30 December 2025**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License